दिवाकर चित्रकथा

अंक 59
मूल्य 20.00

महाबल मलयासुन्दरी

प्राकृत भारती अकादमी जयपुर

सुसंस्कार निर्माण विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबल मलया सुन्दरी

किसी अनुभवी की उक्ति है—

जो ताकूं कांटा बुवै ताहि बोव तू फूल।
तुझे फूल का फूल है, वाकूं है तिरशूल।।

संसार का नियम है बुराई करने पर वह बुराई सौ गुनी लौटकर आती है और भलाई करने पर भलाई भी हजार गुनी बनकर आती है। आश्चर्य तो यह है कि इस सत्य-तथ्य को समझते हुए भी मानव दूसरों के लिए गड्ढा खोदता रहता है। वैर, द्वेष, ईर्ष्या आदि क्षुद्र भावों के वश मानव दूसरों का अनिष्ट करने का दुश्चक्र चलाता रहता है। किन्तु अन्त में परिणाम होता है जो शूल दूसरों के लिए बिछाये, वे उसी के पाँवों में चुभते हैं और त्रिशूल की तरह उसके हृदय को भेदते-वेधते-चीरते रहते हैं।

वीरधवल राजा की रानी चम्पकमाला बड़ी शीलवती धर्मपरायणा थी, तो दूसरी रानी कनकमाला कठोर स्वभाव की ईर्ष्यालु और सदा दूसरों का अहित करने की दुर्भावाना में जलती थी। चम्पकमाला की पुत्री मलया सुन्दरी भी अपनी माँ के समान शील, धर्म, सहिष्णुता आदि गुणों की जीवंत मूर्ति थी।

राजा सूरपाल का पुत्र **'मलयकुमार'** एक धर्मनिष्ठ, सदाचारी और परोपकारी वीर युवक था। महाबल मलया के जीवन-पथ में विमाता कनकमाला ने पग-पग पर उसे हर प्रकार से दुःख देने और कष्टों की आग में जलाने का प्रयत्न किया। किन्तु महाबल मलया जैसे धर्मनिष्ठ सदाचारी सत्पुरुषों ने उन शूलों को भी फूलों में बदल दिया। जीवन में आये तूफानी झंझावतों का साहस और सूझबूझ के साथ सामना किया। विमाता द्वारा किये गये सभी अपराध क्षमाकर महानता का परिचय दिया। एक ने नीचता करने में कमी नहीं रखी तो दूजे ने उदारता का परिचय देकर अपनी महानता को स्थापित किया। अन्त में महाबल-मलया सुन्दरी की नीति और धार्मिकता की जीत हुई।

इस अत्यन्त रोचक और प्रसिद्ध पौराणिक कथा के आधार पर श्रमण सन्मति मुनि जी म. 'साहिल' ने सरल, सहज भाषा में यह शब्दांकन किया है। मुनिश्री स्थानकवासी समाज के बहुश्रुत विद्वान् युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी म. सा. के शिष्य श्री विनय मुनि जी म. के शिष्य हैं। आप एक कवि, गीतकार, प्रभावशाली वक्ता और क्रांतिकारी विचारक संत हैं।

—महोपाध्याय विनय सागर *—श्रीचन्द सुराना 'सरस'*

लेखक : **श्रमण सन्मति मुनि जी म. 'साहिल'**

सम्पादक :	*प्रकाशन प्रबंधक :*	*चित्रांकन :*
श्रीचन्द सुराना 'सरस'	**संजय सुराना**	**सत्य प्रकाश तिवारी**

प्रकाशक

श्री दिवाकर प्रकाशन

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. फोन : 0562–2851165

सचिव, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर

13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. फोन : 2524828, 2561876, 2524827

अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबल मलया सुन्दरी

चन्द्रावती नगरी के राजा वीरधवल की दो रानियाँ थीं—चम्पकमाला और कनकमाला। एक दिन संध्या के समय राजा महल की छत पर खड़ा किसी विचार में डूबा हुआ था। अचानक रानी चम्पकमाला बोली—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगली प्रातः राजा राजसभा में जाने को तैयार हो रहा था तभी एक दासी भागती हुई राजा के पास आई—

महाराज ! रानी जी को..... कुछ हो गया ?

राजा तुरन्त रानी के महल में पहुँचा। रानी चम्पकमाला बेहोश पड़ी थी। राजा ने उसे झकझोरा—

महारानी क्या हुआ ? उठिए..... आँखें खोलिए।

परन्तु रानी ने आँखें नहीं खोलीं।

तब तक राजवैद्य आ गये थे। रानी की नाड़ी देखी तो हाथ हिलाकर उदास स्वर में बोले—

राजन ! कुछ नहीं रहा.....।

क्या रानी नहीं रही ? अब मैं भी जीवित रहकर क्या करूँगा।

राजा बच्चों की तरह रोने लगा। मंत्री, पुरोहित आदि राजा को सांत्वना देने लगे।

संध्या तक रानी की चिता लेकर लोग नदी तट पर आये। चन्दन की चिता पर रानी का शव रखा। तभी राजा की नजर पास की नदी में बहते हुये एक संदूक पर पड़ी। राजा ने कहा—

अरे...देखो जरा ! इस सन्दूक में क्या है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेवकों ने सन्दूक नदी से निकाला और उसे खोला। सभी चौंक पड़े।

अरे ! रानीजी तो मूर्च्छित पड़ी हैं ?

तो फिर चिता पर कौन है ?

तब तक चिता से धुँआ उठकर आकाश की तरफ जाने लगा। शव वहाँ से गायब था।

अरे ! यह क्या माया है ?

कुछ देर बाद रानी को होश आ गया। वह सन्दूक से बाहर निकलकर पेड़ के नीचे बैठ गई। उसने बताया—

महाराज ! मैं प्रातः वन-भ्रमण के लिए गई थी, उसी समय किसी राक्षस ने मुझे उठा लिया।

और एक विशाल गुफा में ले जाकर पटक दिया। वह बोला—

मैं शाम तक लौटकर वापस आऊँगा और तेरे साथ विवाह रचाऊँगा। तब तक तू यहीं रह।

इतना कहकर राक्षस कहीं चला गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुफा में रानी चम्पकमाला अकेली घूमने लगी। रानी को वहाँ भगवान ऋषभदेव की स्फटिक प्रतिमा दिखाई दी। रानी वहीं बैठकर भगवान ऋषभदेव का ध्यान करने लगी—

प्रभो ! इस विकट संकट की घड़ी में आप ही मेरे रक्षक हैं। तारणहार हैं। मेरे शील की रक्षा कीजिए प्रभो !

एक प्रहर तक प्रार्थना करने के पश्चात् अचानक एक दिव्य स्वरूप रानी के सामने प्रकट हुआ—

पुत्री ! मैं भगवान की शासन सेविका चक्रेश्वरी देवी हूँ। तेरी भक्ति से प्रसन्न हूँ। तुझे जो चाहिए वर माँग ले !

माता ! मेरे शीलधर्म की रक्षा कीजिए। मुझे इस संकट से उबारिए।

मैं तेरी रक्षा करने ही तो आई हूँ। बोल और क्या चाहिए ?

माता ! मेरी गोद अभी तक खाली है। बस और कुछ भी चाहत नहीं है।

अब समय आ गया है। तू एक पुत्र और पुत्री की माँ बनेगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माँ, इस राक्षस से मेरा उद्धार कैसे होगा ?

राक्षस मेरे डर से अब यहाँ नहीं आयेगा। ले यह 'लक्ष्मी पुंज' हार तुझे देती हूँ। यह चमत्कारी हार है। इसे अपने पास रखना।

फिर देवी ने रानी को लकड़ी की पेटी में लिटा दिया।

और जब मेरी आँख खुली तो मैं यहाँ थी।

देवी की कृपा से आप सकुशल लौट आईं।

इसके पश्चात् राजा-रानी तथा सभी लोग प्रसन्नतापूर्वक नगर वापस आ गये।

लगभग एक वर्ष पश्चात् रानी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। उसके पश्चात एक पुत्री को और जन्म दिया। उत्सव मनाया गया। रानी ने कहा—

इसका नाम मलया सुन्दरी रखेंगे।

वाह ! अति सुन्दर, मलयकेतु की बहन मलयासुन्दरी

रानी चम्पकमाला राजा की परम चहेती हो गई और छोटी रानी कनकमाला उपेक्षिता। इससे कनकमाला मन ही मन सौतिया डाह से जलती रहती।

कुछ समय से महाराज मेरी उपेक्षा करने लगे हैं। बस चम्पकमाला की ही हर बात मानते हैं। हमेशा उसी के पास रहते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीस वर्ष पश्चात् वीरधवल के एक परम मित्र थे प्रतिष्ठानपुर के राजा सूरपाल। उनका एक पुत्र था 'महाबल'। एक दिन राजकुमार महाबल वनों में भ्रमण कर रहा था। तभी उसे प्यास लगी।

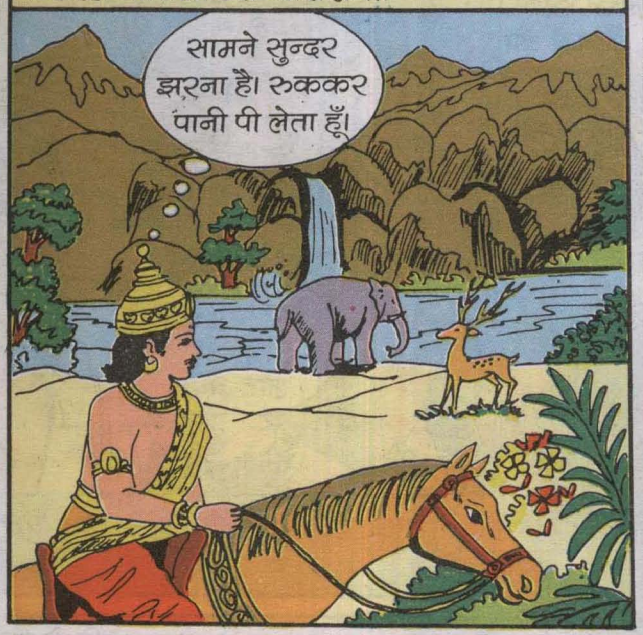

उसने शीतल, मधुर पानी पीया। तभी उसने देखा वहाँ एक दिव्य सुन्दरी उसके सामने खड़ी मुस्करा रही है। सुन्दरी पास आई। बोली—

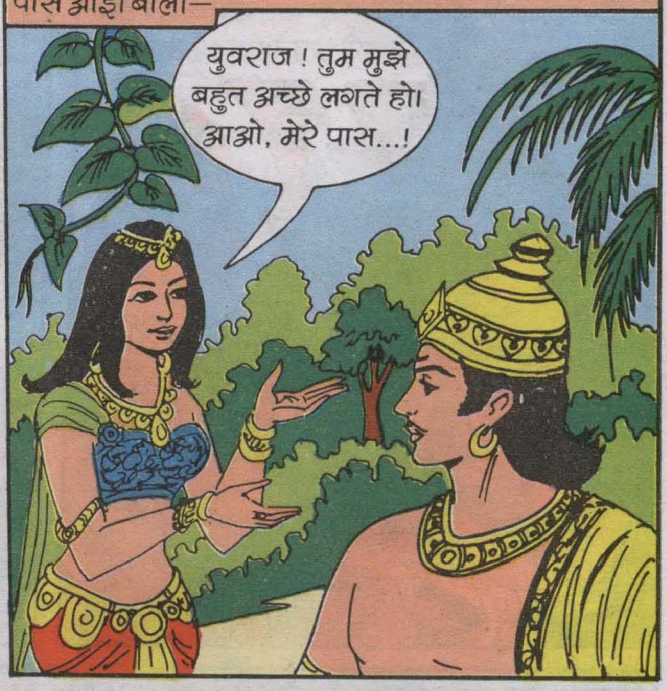

महाबल नें सुन्दरी को देखा और फिर उपेक्षा से वापस जाने लगा। सुन्दरी ने फिर पुकारा तो राजकुमार ने सोचा—

महाबल ने पलटकर कहा—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबल ने चुपचाप पीठ फेर ली और लौटने लगा। तभी सुन्दरी चिल्लाने लगी और एक देव प्रकट हुआ—

यह दुष्ट मेरी लाज लूटकर जा रहा है।

क्या बात है प्रिये ! किसने तुम्हारे ऊपर बुरी नजर डाली ?

सुन्दरी ने राजकुमार की तरफ इशारा किया। देव राजकुमार के पास आया और मुस्कराते हुए बोला—

डरो मत ! मैंने इस दुष्टा का सब नाटक देख लिया है। तुम्हारी धर्म परायणता भी देखी है। मैं तुमसे प्रसन्न हूँ। जो चाहे माँग लो।

मुझे कुछ नहीं चाहिए। बस इन्हें क्षमा कर देना।

देव ने कहा—

देव दर्शन कभी व्यर्थ नहीं जाता। मैं तुम्हें तीन विद्याएँ देता हूँ। पहली विद्या से तुम अपना मनचाहा रूप बना सकते हो। दूसरी वशीकरणी विद्या से अपने शत्रुओं को वश में कर सकते हो।

और तीसरी इस गुटिका को आम के रस में घिसकर जिसे तिलक करोगे, उसका मन चाहा रूप बदल जायेगा।

इसके पश्चात देव और सुन्दरी आकाश में उड़ गये। महाबल वापस नगर में आ गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिष्ठानपुर राजदरबार

एक दिन राजा सूरपाल ने अपने महामंत्री से कहा—

इस वर्ष के अष्टान्हिक महोत्सव पर हम अपने मित्र राजा वीरधवल के लिए कोई उपहार भेजना चाहते हैं। आप स्वयं यह उपहार लेकर चन्द्रावती जाईये।

महाराज आपकी आज्ञा हो तो मैं भी चन्द्रावती देखना चाहता हूँ।

राजा ने महाबल को भी स्वीकृति दे दी।

राजकुमार और महामंत्री चन्द्रावती आये। राजा को उपहार भेंट किये। राजा ने महाबल को देखकर पूछा—

महामंत्री जी ! यह वीर नर-रत्न आपके साथ कौन है ?

महाराज ! यह भी मेरा साथी एक सभा रत्न है।

मंत्री ने राजकुमार महाबल का असली परिचय छुपा लिया।

सायंकाल राजकुमार महाबल अकेला ही चन्द्रावती नगरी में भ्रमण करने निकला। महल के गवाक्ष में एक सुन्दरी कन्या खड़ी नगर की शोभा देख रही थी। राजकुमार ने महलों की तरफ ऊपर नजर उठाई तो राजकुमारी पर उसकी दृष्टि टिक गई।

क्या अद्भुत सौन्दर्य है ! क्या कोई देव कन्या है ?

ओह कितना सुन्दर पुरुष है यहा क्यों मेरी नजरें उस पर से नहीं हट रही हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोनों की नजरें मिलीं। पूर्व जन्मों के स्नेह का अज्ञात सुप्त तार झंकृत हो उठा। बहुत देर तक नजरें परस्पर टकराती रहीं। स्नेह की बिजली झनझनाती रही। राजकुमारी मलया ने प्रेम निमंत्रण का एक पत्र ऊपर से फेंका।

महाबल ने पत्र लपक लिया और एकान्त स्थान पर आकर पत्र पढ़ने लगा।

पत्र पढ़कर महाबल ने सोचा—

फिर विचार बदले—

मध्य रात्रि के समय राजकुमार पत्र में दिये संकेतित मार्ग से चुपचाप राजकुमारी के शयनकक्ष में पहुँच गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजकुमारी जाग रही थी। उसने स्वागत किया—

आइये कुमार ! आपका स्वागत है।

राजकुमारी के कक्ष में कोई है। मुझे पता करना चाहिए।

राजकुमारी ! तुम्हारा पवित्र प्रेम मुझे यहाँ ले आया

राजकुमारी ने प्रणय निवेदन किया—

मैंने आपको अपना सर्वत्र समर्पण कर दिया है। अब गंधर्व विवाह करके मुझे अपने साथ ले चलिए। यह लक्ष्मीपुंज हार आपके गले में डालकर आपको अपना पति स्वीकार करती हूँ।

उसने दिव्य हार महाबल के गले में डाल दिया।

कनकमाला ने सोचा—

हे भगवान ! राजकुमारी विवाह कर रही है। आज मौका है। अपनी सौत और उसकी लड़की से पुराना बदला चुका लूँ।

उसने तुरन्त जाकर महाराज को जगाया।

महाराज ! जल्दी उठिये। राजकुमारी के कमरे में कोई पुरुष है।

हें ! ये आप क्या कह रही हैं ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा दौड़कर आया और आकर दरवाजा पीटने लगा—

राजकुमारी दरवाजा खोलो ! कमरे में कौन है।

हे भगवान ! महाराज की आवाज। अब क्या होगा ?

डरो मत, सब ठीक होगा।

महाबल ने देव द्वारा दी विद्या से रानी चम्पकमाला का रूप धारण कर लिया।

मलया ने दरवाजा खोला। महाराज कनकमाला के साथ भीतर घुसे। रानी चम्पकमाला रूपी महाबल ने उठकर स्वागत किया—

महाराज ! आधी रात में आप यहाँ ? क्या बात है ?

महारानी ! यही प्रश्न हम आपसे पूछना चाहते हैं ?

हें....? अन्दर यह कैसे ? मैंने तो पुरुष की आवाज सुनी थी।

महाराज ! मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं मलया से बातें करने यहाँ आ गई।

ठीक है महारानी, आप बातें करें हम जा रहे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा बाहर आकर कनकमाला पर बरस पड़ा—

तू अपनी नीचता से बाज नहीं आती। अब तुझे किये का फल मिलेगा।

और क्रोध में तमतमाया राजा महल में चला गया।

प्रातः उसने सैनिकों को बुलाकर रानी को देश से निकालने का आदेश दे दिया। सैनिकों ने रानी का मुँह काला करके सीमा से बाहर छोड़ दिया।

यह सब मलया के कारण हुआ है। मैं उसे छोड़ूँगी नहीं।

कुछ दिनों बाद मंत्री और महाबल अपनी राजधानी लौट आये। एक रात्रि महाबल के कमरे से अचानक लक्ष्मीपुंज हार गायब हो गया।

अरे ! अभी तो इधर रखा था, किसने ले लिया। जरूर कोई चोर घुसा है।

महाबल महल से बाहर आया तो उसे हार लेकर चोर भागता हुआ दीखा। राजकुमार उसका पीछा करता हुआ घने जंगल में पहुँच गया।

रुक जा दुष्ट !

अरे ! राजकुमार मेरे पीछे। हार फेंक दूँ तो जान बच जाये।

चोर ने हार फेंक दिया और जंगल में भाग गया। महाबल हार लेकर वृक्ष पर बैठकर रात गुजारने लगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इधर रानी कनकमाला जंगल में भटकती हुई चोरों के सरदार के हाथ लग गई और उसके साथ रहने लगी। एक दिन उसके मन में मलया से बदला लेने का विचार आया। उसने चोरों के सरदार को उकसाया—

चन्द्रावती नगरी के राजा की पुत्री मलया अपूर्व सुन्दरी है। वह प्रत्येक पूर्णिमा को पहाड़ी पर स्थित कामदेव मन्दिर में पूजा करने जाती है।

अच्छा! इतनी सुन्दर है, तो उसे मैं अपनी रानी बनाऊँगा।

मौका देखकर दस्यु राजा ने मलया का अपहरण कर लिया। बोला—

चल! मैं तुझे अपनी पटरानी बनाऊँगा। जो माँगेगी वही दूँगा।

दस्युराज! एक सप्ताह का मेरा व्रत है। तब तक मुझे स्पर्श मत करना। फिर तुम जैसा कहोगे, वैसा करूँगी।

सरदार ने मलया की बात मान ली।

एक रात मौका देखकर मलया अकेली जंगल में भाग निकली। दस्युराज के साथी चोर भी उसका पीछा करते हुए आ पहुँचे। वे मलया को पकड़कर ले जाने लगे। मलया चिल्लाई—

मेरी रक्षा करो! मुझे बचाओ! महाबल कुमार तुम कहाँ हो?

मलया मैं आ गया।

यह दुष्ट कौन है? मारो इसे।

महाबल पेड़ से नीचे कूदकर चोरों का मुकाबला करने लगा।

कुछ ही देर में महाबल ने युद्ध करके चोरों को भगा दिया।

राजकुमार! आप अचानक यहाँ कैसे?

मलया! मैं एक चोर का पीछा करता हुआ जंगल में आया था। रात गुजारने के लिए पेड़ पर बैठा था।

फिर महाबल ने हार चोरी की पूरी घटना सुनाई। मलया को लेकर नगर की तरफ चल पड़ा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबल-मलया जगलों में भटकते हुए चन्द्रावती नगरी के समीप के एक गाँव में आये। वहाँ लोग बातें कर रहे थे—

सुना है कि राजा ने अपनी पुत्री मलया सुन्दरी का स्वयंवर निश्चित कर दिया था। इसी बीच उसका अपहरण हो गया। कहीं पता नहीं चला। इसलिए राजा-रानी दुखी होकर चितारोहण कर कल अपनी जान देने जा रहे हैं।

दोनों ने यह बात सुनीं तो चिंतित हो उठे।

स्वामी ! अब क्या होगा ? कुछ सोचिए।

चिंता मत करो। समस्या खड़ी होती है तो समाधान भी मिलता ही है। धीरज रखो।

गाँव के बाहर एक पुराना जीर्ण देव मन्दिर था। महाबल ने मलया को उस मन्दिर के एक कमरे में छिपा दिया।

मलया ! तुम यहीं पर रुको। मैं नगर में जाकर पता करता हूँ।

स्वामी ! मैं आपका इन्तजार करूँगी। शीघ्र ही वापस आना।

महाबल नगर की तरफ चल पड़ा।

महाबल एक ज्योतिषी का रूप धारण कर राजसभा में आया। राजा को चिंतित देखकर पूछा—

राजन् ! आप इतने चिंतित क्यों हैं ?

ज्योतिष्यवर ! मेरी पुत्री का किसी ने अपहरण कर लिया है। कल उसका स्वयंवर है। अब मैं क्या करूँ ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वयंवर मण्डप के बीच में राजा वीरधवल ने राजकुमारों से निवेदन किया—

इस पेटी में कन्या वरमाला लिये स्थित है। जो इस पेटी को खोल लेगा। राजकुमारी उसी का वरण कर लेगी।

वाह ! यह तो विचित्र स्वयंवर है।

सबसे पहले मैं प्रयास करता हूँ।

एक-एक कर सभी राजकुमारों ने पेटी खोलने का प्रयास किया, परन्तु पेटी नहीं खुली। सब निराश होकर कहने लगे—

अरे पेटी खुल क्यों नहीं रही।

महाराज ने कैसी अजब शर्त रखी है... ? पेटी तो किसी से भी नहीं खुली।

तभी एक जोगी के वेष में महाबल ने प्रवेश किया।

महाराज ! आज्ञा हो तो मैं भी प्रयत्न करूँ।

इतने वीर क्षत्रिय भी नहीं खोल सके तो साधु बाबा तुम कैसे पेटी खोल लोगे ?

जोगी पेटी के पास आया और विशेष तरीके से पेटी खटखटाई—

ऐ पेटी खुल जा ! खुल जा !

अरे, यह तो महाबल की आवाज है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजकुमारी भीतर से कुंडी खोलकर बाहर निकल आई। उसके हाथ में लक्ष्मीपुंज हार था। वह उसने राजकुमार के गले में डाल दिया।

अरे ! हम क्षत्रियों के होते एक जोगी के गले में वरमाला डाल दी ! यह तो हमारा अपमान है।

सभी राजकुमारों ने तलवार खींच ली। तभी महाबल ने जोगी वेष हटाकर अपना चेहरा दिखाया।

अरे ! यह तो राजकुमार महाबल है।

राजकुमार महाबल की जय !

महाबल को देखकर राजकुमारों का क्रोध शांत हो गया।

धूमधाम से राजकुमारी मलया का पाणिग्रहण महाबल के साथ हो गया।

महाबल मलया के साथ विवाह कर अपने नगर को आ रहा था। तभी लोहखुर नाम के उसी दस्यु ने आक्रमण कर दिया, जिसने मलया का अपहरण किया था।

आज किसी को मत छोड़ना ! पूरी बारात लूट लो...

सबको मार डालो।

वाह ! राजकुमारी को तो मैं ले जाऊँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भयंकर युद्ध हुआ। राजकुमार महाबल ने अपनी तलवार से एक-एक कर दस्यु-दल को मौत के घाट उतार दिया। लोहखुर भी ढेर हो गया।

सब मारे गये। राजकुमारी बाहर आ जाओ। कोई खतरा नहीं है।

रानी कनकमाला भी उन दस्युओं के साथ थी। उसने जब देखा कि महाबल विजयी हो गया है तो दौड़कर मलया सुन्दरी के पैरों में पड़ गई और नाटक करने लगी—

बेटी ! तुमने मुझे बचा लिया। इस दस्युराज ने मुझे अपने चंगुल में फंसा रखा था। अब मुझे अपने साथ ले चलो।

उठिये ! आप तो मेरी माँ जैसी हैं। हमारे साथ प्रतिष्ठानपुर चलिये।

राजकुमार दस्युओं द्वारा चुराया अपार धन और कनकमाला को अपने साथ लेकर नगर की ओर चल पड़ा।

प्रतिष्ठानपुर पहुँचकर कुमार ने लोहखुर चोर का अपार धन पिता के सामने रखा—

पिताश्री ! लोहखुर चोर का आतंक मैंने समाप्त कर दिया। उसका चुराया यह धन भी आपके सामने है।

वाह बेटा ! तुमने अपनी शूरवीरता का परिचय दे ही दिया।

फिर राजा वीरधवल ने प्रजाजन को बुलाकर जिसका जो धन चोरी गया था, वापस कर दिया।

कनकमाला मलया सुन्दरी के साथ ही महलों में रहने लगी। वह हर पल मलया से बदला लेने के बारे में सोचती रहती।

मैं मलया से अपनी बेइज्जती का बदला लेकर रहूँगी। इसी के कारण राजा वीरधवल ने मुझे देश निकाला दिया था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन राजा के पास सीमा प्रदेश से गुप्तचर आये—

महाराज ! पड़ोसी शत्रुओं ने आक्रमण कर दिया है। प्रजा को लूट रहे हैं।

पिताश्री ! मुझे आज्ञा दीजिये। मैं शत्रु का मान मर्दन करूँगा।

पिता को पुत्र की बहादुरी पर भरोसा था। उन्होंने स्वीकृति दे दी।

महाबल युद्ध के लिए चला गया। एक दिन मलया सुन्दरी ने कनकमाला से कहा—

स्वामी युद्ध पर गये हैं। मैं अकेली महलों में रहती हूँ। मुझे बड़ा भय लगता है। आप मेरे पास ही सोया करें।

ठीक है बेटी ! जैसी तुम्हारी आज्ञा।

अब राजकुमारी से बदला लेने का मौका आ रहा है।

षड़यंत्र रचती कनकमाला राजकुमारी के पास ही रहने लगी।

धीरे-धीरे कनकमाला ने मलया सुन्दरी का पूरा विश्वास जीत लिया। एक दिन उसने कहा—

बेटी ! रात को एक राक्षसी आई थी। उसके एक हाथ में खप्पर और दूसरे हाथ में चमचमाती तलवार थी। उसका शरीर कोयले जैसा काला, बाल बिखरे हुए थे। रात भर मैं उससे जूझती रही। बड़ी मुश्किल से उसे भगा पाई। नहीं तो वह दोनों को मार देती।

अब क्या होगा माता जी !

और मलया भय से काँपने लगी।

बेटी ! तू डर मत ! मैं उससे उसी का रूप बनाकर लड़ूँगी। बस तू मुझे कुछ चिड़िया के पंख, तलवार, काला रंग और काले कपड़े मँगवा दे। पर यह ध्यान रखना यह बात किसी को पता न चले।

ठीक है, मैं चुपचाप यह वस्तुएँ ला दूँगी।

मलया ने सब चीजें मँगवा दीं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ दिन बाद प्रतिष्ठानपुर में अचानक महामारी फैल गई। राजा ने वैद्यों को बुलाया। तांत्रिकों से अनुष्ठान करवाया। परन्तु महामारी पर काबू नहीं हो सका। सबने अपने-अपने विचार रखे।

संध्या के समय राजा महलें वापस आ गया। राजा को अकेले विचार करते देख कनकमाला आई और बोली—

रात को कनकमाला ने राक्षसी का रूप बनाया। वह महल के आँगन में एक हाथ में खप्पर, एक हाथ में तलवार लिये उछल-कूद करने लगी। राजा ने देखा तो सैनिकों को आदेश दिया—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिपाही दौड़े। कनकमाला ने मलया के कक्ष में आकर भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। और मलया से बोली—

बेटी ! मुझे बचा। राजा के सिपाही मुझे पकड़ने आ रहे हैं।

हड़बड़ी में मलया ने एक पेटी में उसे छुपा दिया। सिपाहियों ने दरवाजा खटखटाया। मलया ने द्वार खोला। सिपाही बोले—

वह राक्षसी कहाँ है ?

यहाँ तो मैं अकेली हूँ। कोई राक्षसी नहीं है।

अब राजा को पूरा विश्वास हो गया कि मलया ही राक्षसी है। सुबह राजा ने कोतवाल को बुलाकर आदेश दिया—

मलया सुन्दरी को रथ में बिठाकर दूर जंगल में ले जाकर वध कर डालो।

कोतवाल अच्छा आदमी था। परन्तु राजाज्ञा स्वीकारते हुए वह मलया को दूर जंगल में ले गया और बोला—

देवी ! मैं जानता हूँ कि तुम निर्दोष हो, परन्तु क्या करूँ मजबूर हूँ। मेरी तलवार तुम्हारे पर नहीं चल सकती। तुम जंगल में चली जाओ।

और मलया को जंगल में छोड़कर वह वापस आ गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुनसान बीहड़ जंगल में मलया अकेली चल रही थी। अचानक सिंह की दहाड़ सुनकर वह काँप गयी। फिर सोचने लगी—

मुझे शरीर से भी ज्यादा अपना धर्म प्यारा है। धर्म मेरी रक्षा करेगा। धर्म का पालन करते हुए प्राण भी त्याग दूँगी तो सद्गति प्राप्त होगी। फिर डर किस बात का ?

तभी सामने ही सिंह दहाड़ते हुए आ गया। मलया हाथ जोड़कर सिंह के सामने खड़ी हो गई और बोली—

हे वनराज ! तुम इस जंगल के राजा हो। मैं प्रजा हूँ। अपनी प्रजा की रक्षा करना तुम्हारा धर्म है। क्या तुम अपनी प्रजा की रक्षा नहीं करोगे ?

मलया के भावों का प्रभाव सिंह पर पड़ा। वह मुड़ गया। मलया के आगे-आगे चलने लगा। जैसे कह रहा हो—

मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। चलो ! मेरे पीछे-पीछे आ जाओ।

सिंह मलया को एक गुफा के द्वार पर छोड़कर चला गया।

मलया ने रातभर गुफा में विश्राम किया। सुबह पास के सरोवर में स्नानादि कर पेड़ों के फल खाये। अब वह निश्चत होकर वहीं रहने लगी। कुछ समय बाद मलया सुन्दरी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया।

मेरे लाल तू चन्द्रमा से भी सुन्दर है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन मलया सरोवर के पास खड़ी थी। तभी शिकार करने आये पड़ोसी देश के राजा की नजर उस पर पड़ी। वह उस पर आसक्त हो गया।

सुन्दरी ! इस घने बीहड़ जंगल में अकेली क्या कर रही हो ? मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें अपनी महारानी बनाऊँगा।

नहीं, नहीं राजन् ! यह सम्भव नहीं है। मैं किसी की ब्याहता स्त्री हूँ।

परन्तु राजा पर काम का भूत सवार था। वह मलया के पास आकर उसे पकड़ने की चेष्टा करने लगा। मलया दूर हट गई।

मैं तुम्हारे साथ जबर्दस्ती नहीं करना चाहता। इसलिए कहता हूँ तुम चुपचाप मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें सब सुख दूँगा।

दूर रहो मुझसे। मैं नारी अबला हूँ तो काली भी हूँ। मुझे स्पर्श भी किया तो तुम भस्म हो जाओगे।

मलया कुछ सोचने लगी। तभी राजा ने झोली में सोये शिशु का रुदन सुना।

ओह ! यह बच्चा भी इसी का लगता है। मैं कितना भाग्यशाली हूँ। निःसंतान को संतान भी मिली और यह सुन्दरी भी।

उसने शिशु को उठा लिया—

मैं इसे ले जा रहा हूँ। अब तेरी इच्छा हो तो मेरे साथ आजा.....।

बछड़े के पीछे जैसे गाय चल पड़ती है, मलया भी पुत्र मोह से विवश होकर राजा के पीछे-पीछे चलने लगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा रथ में बैठाकर मलया को नगर के बाहर उद्यान में स्थित महल में ले आया और बोला—

तुम यहाँ पर रहोगी। मैं तीन दिन का समय देता हूँ। मेरी बात मान लो, वर्ना फिर जबर्दस्ती करूँगा।

मलया को वहीं नजरबंद करवाकर राजा चला गया।

तीन दिन बाद राजा आया। मलया विवश थी। उसने चतुराई से जवाब दिया—

राजन्! मैं छह मास की आराधना कर रही हूँ। अतः मुझे इतना समय दीजिए। फिर तो आप ही मेरे आधार हैं।

ठीक है! छह मास तक तुम्हारा इंतजार करूँगा। इससे आगे एक दिन भी नहीं।

इधर युद्ध जीतकर महाबल जब नगर में वापस आया तो पता चला कि मलया सुन्दरी को गर्भवती हालत में मरवा दिया गया है। उसने राजा सूरपाल से पूछा—

पिताश्री! आपने मलया को किस अपराध की सजा दी है?

पुत्र! वह मायावी राक्षसी थी। नरभक्षिणी है। रानी कनकमाला के कहने पर सैनिकों ने उसे देखा है।

यह सुनते ही महाबल ने चीखकर कहा—

मायाविनी मलया नहीं, यह कनकमाला ही है। आपने इतना नहीं सोचा जिस मलया ने चींटी की हिंसा को भी पाप समझा, क्या वह नरभक्षिणी हो सकती है?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबल की आँखों से आँसू बहने लगे—

पिताश्री ! आपने एक निर्दोष सती साध्वी को इतना कठोर दण्ड दे दिया। अब मुझे भी मार दीजिए। उसके बिना मेरा जीना व्यर्थ है।

फिर क्रोध में तमतमाकर बोला—

वह दुष्ट कनकमाला कहाँ है ?

महाबल तलवार हाथ में लिये महलों में आया। कनकमाला ने ऊपर से ही उसे आते देख लिया। वह महलों के पिछवाड़े से जंगल की ओर भाग निकली।

रुक जा दुष्टा ! कहाँ भागती है।

लगता है मेरा भांडा फूट गया। भागने में ही भलाई है।

महाबल ने आकर कहा—

पिताश्री ! अब मेरे लिए यह घर शमशान तुल्य हो गया है। मैं भी जा रहा हूँ। मलया के बिना मेरे लिए यह संसार असार है।

पुत्र ! मेरी बहुत बड़ी भूल हो गयी। क्षमा कर दो। अब तुम मुझे छोड़कर जाओगे तो मैं भी नहीं जी पाऊँगा। पश्चात्ताप की आग में तिल-तिल जलता रहूँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसी समय एक ज्योतिषी राजसभा में आया। राजा ने उसे सारी घटना बताई और उपाय पूछा। ज्योतिषी ने जन्त्री देखकर बताया—

राजन्! मलया अभी संकट में है, परन्तु जीवित है। वह एक वर्ष बाद आपको मिल जायेगी।

फिर राजा ने कोतवाल को बुलाकर पूछा—

सच-सच बताओ, तुमने मलया का वध किया या नहीं?

कोतवाल ने काँपते हुए कहा—

महाराज! अपराध क्षमा हो। मुझे पक्का विश्वास था कि युवरानी निर्दोष हैं। माता सीता की तरह निष्कलंक और गंगा की तरह पवित्र हैं। मैंने उन्हें जंगल में जीवित ही छोड़ दिया था।

राजा सूरपाल ने तुरन्त सैनिकों को मलया सुन्दरी की खोज में जंगल में भेज दिया।

महाबल भी मलया की खोज में जोगी वेष बनाकर चन्द्रावती से निकलकर जंगलों की खाक छानता हुआ एक दिन तिलकपुर पहुँच गया। नगर में उद्घोषणा होती सुनी—

राजा की रानी को जहरीले साँप ने काट लिया है। कोई यंत्र, मत्र, तंत्र का जानकार यदि उसे जीवित कर दे तो राजा उसे मुँह माँगी वस्तु देगा।

मेरे पास अवर्सर्पिणी विद्या है। रानी का विष उतारकर एक सद्कार्य ही कर देता हूँ। एक अबला की सहायता ही कर देता हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वह राजसभा में राजा के पास आया और राजा उसे लेकर उद्यान में स्थित महल में आया और एक मूर्छित स्त्री की तरफ इशारा करके बोला—

योगीराज ! यह है मेरी रानी। आप चमत्कारी दीखते हैं। मेरा कार्य सिद्ध कर दीजिये। इसे ठीक कर दीजिये। मैं आपको मालामाल कर दूँगा।

महाबल मलया को देखकर चौंक गया—

अरे ! यह तो मेरी पत्नी मलया सुन्दरी है। यह राजा की रानी कैसे हो सकती है ?

महाबल ने मलया की नाड़ी देखी। बोला—

इसे बहुत ही जहरीले साँप ने काटा है। समूचा शरीर नीला पड़ चुका है। फिर भी प्रयत्न करता हूँ। मुझे यहाँ अकेला छोड़ दीजिए। मंत्र साधना कर जल छिड़कूँगा।

एकान्त पाकर महाबल ने अरिहंत भगवान का स्मरण किया। फिर झोली से नागमणि निकाली। मंत्रित जल मलया पर छिड़का।

ओम नमो अरिहंताणं.....

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ देर बाद मलया ने आँखें खोलीं। महाबल को देखकर चकित स्वर में बोली—

स्वामी ! आप.....यहाँ !

धीरे बोलो !

कुछ देर दोनों ने आपबीती सुनाई।

बाहर खड़े राजा को आवाजें सुनाई दीं तो वह भीतर आ गया। मलया को बैठा देख प्रसन्नता से बोला—

योगीराज ! आपने मेरी प्रिय रानी को बचाकर बहुत उपकार किया है। बोलिए आपकी क्या सेवा करूँ।

राजन् ! सच कहो, क्या यह तुम्हारी विवाहित पत्नी है ? झूठ बोले तो देवी माता तुम्हें अभी भस्म कर देगी।

यह सुनकर राजा डरता हुआ बोला—

योगीराज ! मुझे यह अकेली जंगल में मिली। मैंने इसे आश्रय दिया। अब इसका जीवन सुखी करना चाहता हूँ।

राजन् ! यह मेरी पत्नी है। मैंने आपका काम कर दिया। आप मुझे मेरी पत्नी और बच्चा लौटा दीजिए।

फिर महाबल ने मलया पर झूठा आरोप लगाकर नगर से निकालने की पूरी घटना राजा को बताई। सुनकर राजा ने कहा—

मुझे विश्वास नहीं होता। फिर भी आप कह रहे हैं तो मैं मान लेता हूँ। परन्तु आप पहले मेरे कुछ कार्य कर दीजिये, तब मैं आपकी बात पर विश्वास कर लूँगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाबल ने विद्याबल से राजा द्वारा कहे सभी कार्य पूरे कर दिये, परन्तु राजा उसे नये-नये कार्य बताता गया। अन्त में महाबल ने कहा—

राजन्! बहुत हो गया। अब हमें जाने दीजिये। हम वापस अपने नगर जाना चाहते हैं।

रुको राजकुमार! बस अब एक काम और बाकी है, वह भी कर दो। मुझे अपनी पीठ आँखों से दिखा दो।

महाबल ने दो बड़े शीशे मँगाये और पीठ की तरफ लगाकर कहा—

देखो, अपनी पीठ देख लो।

नहीं! मैं अपनी आँखों से ही अपनी पीठ देखना चाहता हूँ।

राजा अपनी बात पर अड़ा रहा। तब महाबल ने विद्या बल से राजा की गर्दन घुमा दी। अब तो राजा दर्द से चीख पड़ा—

मेरी जान बचाओ, मुझे माफ कर दो।

मुझे लगता है इनके अपराध की इतनी सजा काफी है। इन्हें अब क्षमा कर दीजिए।

महाबल बोला—

राजन्! नगर के बाहर उद्यान में चक्रेश्वरी माता का मन्दिर है। नंगे पाँवों वहाँ जाकर अपने अपराधों की क्षमा माँगो, तभी तुम्हें इस दर्द से मुक्ति मिलेगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राजा राजपरिवार के साथ नंगे पाँव हाट-बाजार से होकर देवी मन्दिर में पहुँचा। माता की पूजा-अर्चा की। घुटने टेककर क्षमा माँगी और प्रार्थना की—

माँ ! मेरा अपराध क्षमा करो।

चक्रेश्वरी माता के प्रभाव से राजा पूर्व स्थिति में आ गया।

सबके सामने उसने महाबल मलया से क्षमा माँगी। तभी सैनिक ने आकर समाचार दिया—

महाराज ! उद्यान में ज्ञानी मुनि पधारे हैं।

कितना शुभ समाचार है। चलो मुनि महाराज के दर्शन करने चलें।

सबने उनका प्रवचन सुना। राजा को आत्मबोध हो गया। महल में वापस आकर उसने महाबल से कहा—

राजकुमार महाबल ! अब संसार त्याग कर दीक्षा लेना चाहता हूँ। मेरे कोई संतान नहीं है। इस राज्य को आप सम्भालिए।

महाबल का राज्याभिषेक किया गया। मलया सुन्दरी पटरानी बनी।

फिर राजा ने अपनी रानियों के साथ मुनि महाराज के पास जाकर दीक्षा ले ली।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पड़ोसी राजा वीरधवल और सूरपाल ने सुना कि तिलकपुर के राजा एक जोगी को राज्य सौंपकर दीक्षित हो गये हैं, तो दोनों ने मंत्रणा की—

चलो ! यह मौका है, हम पड़ोसी राज्य को जीतकर अपनी सीमा बढ़ा लेवें।

दोनों ने मिलकर तिलकपुर को घेर लिया। महाबल ने युद्ध में जौहर दिखाया। आक्रमणकारी सेनाएँ भागने लगीं। मौका देखकर महाबल ने एक पत्र लिखकर बाण पर लगाकर छोड़ा। बाण राजा सूरपाल के पाँवों के सामने जाकर गिरा।

राजा ने बाण से निकालकर पत्र पढ़ा—

पूज्य पिताश्री, प्रणाम !

मैं और आपकी पुत्रवधु मलया यहाँ धर्म के प्रभाव से कुशल मंगल हैं। बाकी बातें मिलने पर।

—आपका पुत्र महाबल

राजा सूरपाल तो हर्ष से उछल पड़ा। उसने वीरधवल को खुश खबरी दी। दोनों राजा दौड़े-दौड़े महाबल के पास आये।

युद्ध का माहौल खुशियों में बदल गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिता और श्वसुर को लेकर महाबल अपनी राजधानी आया। एक सप्ताह का आनन्द उत्सव मनाया जाने लगा।

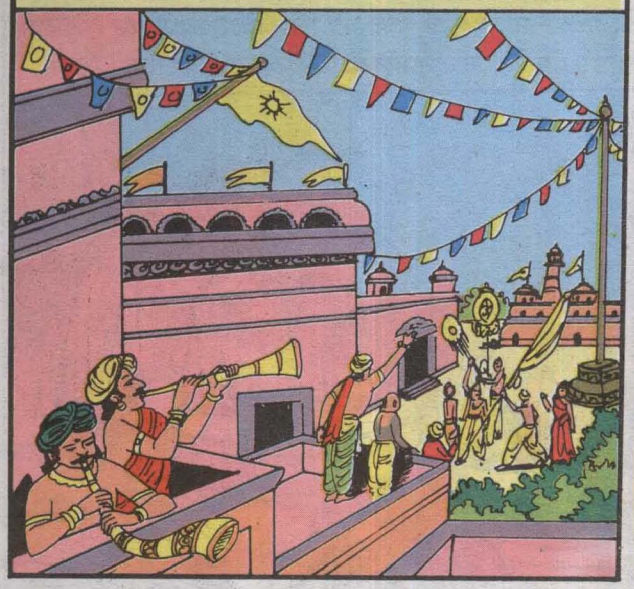

तभी उद्यानपाल ने आकर सूचना दी—

आचार्य के उद्‌बोधक प्रवचन सुनकर राजा सूरपाल और वीरधवल को वैराग्य हो गया। दोनों राजाओं ने अपने राज्य का भार महाबल को सौंपा और संयम स्वीकार कर तपाराधना करने चल पड़े। तीनों राज्यों को सम्भालते हुए महाबल ने भी न्याय-नीतिपूर्वक प्रजा पालन किया।

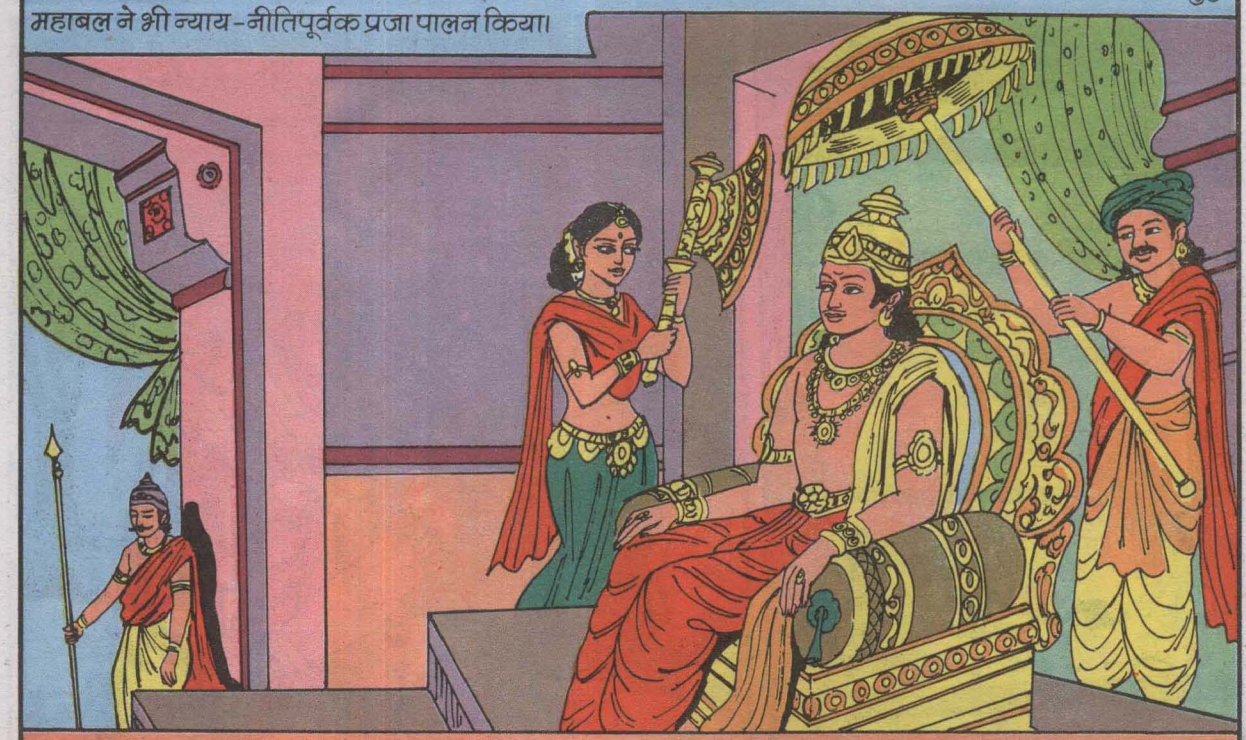

अन्त में अपने पुत्र का राजतिलक कर मलया सुन्दरी के साथ दीक्षा ग्रहण कर आत्मा का कल्याण किया।

—महाबल मलया सुन्दरी रास के आधार पर संक्षिप्त

समाप्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

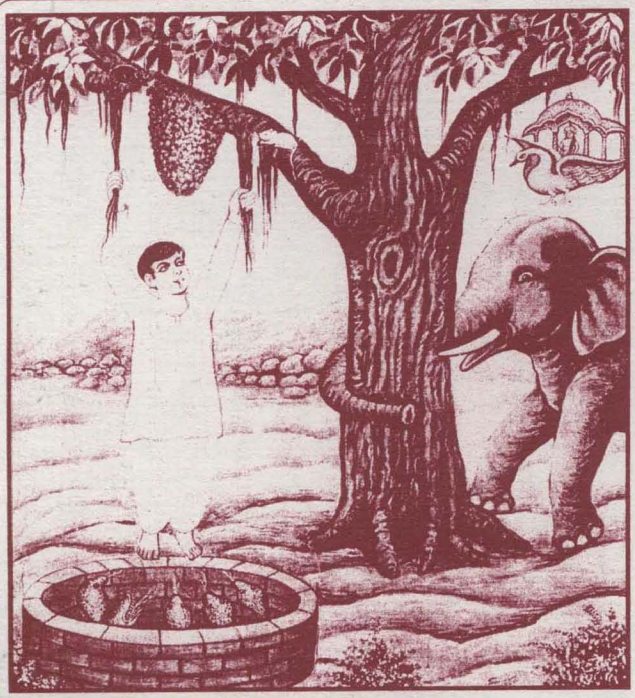

मधु बिन्दु के समान है काम-भोग

काम-भोग (इन्द्रिय सम्बन्धी विषय-सुख) भोगने के समय तो सुखकारी लगते हैं, परन्तु उनके अनुराग (मोह) में आसक्त होने वाला जीव अन्त में दुःख, क्लेश और पीड़ा को प्राप्त करता है।

काम-भोगों की असारता तथा क्षणभर के सुख के बदले दीर्घकालीन दुःखों की परम्परा बताने के लिए आचार्यों ने मधु बिन्दु का दृष्टान्त दिया है।

एक युवक बहुत वर्षों तक परदेश में रहकर व्यापार करता रहा। बहुत-सा धन कमाकर वह अपने नगर को जा रहा था। लम्बा रास्ता पैदल पार करता हुआ युवक एक घने लम्बे जंगल में फंस गया। छोटे संकरे रास्ते में सामने एक भयानक काला जंगली हाथी मिल गया। युवक हाथी से डरकर वापस जंगल की ओर भागने लगा। हाथी भी उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगा। अपनी जान बचाने के लिए वह एक घने पेड़ के ऊपर चढ़ गया। पीछा करता हुआ हाथी आ पहुँचा। युवक ऊँची टहनी पर बैठा था। क्रोध में आकर हाथी उस वृक्ष के तने को सूंड़ से हिला-हिलाकर गिराने की चेष्टा करने लगा। वृक्ष जोर से हिला तो युवक के हाथों की पकड़ ढीली पड़ गई। डाली से हाथ छूटा, वह नीचे गिरने लगा। भाग्य से उसके हाथ में वृक्ष की नीचे लम्बी लटकती दो टहनियाँ (शाखाएँ) आ गई। जहाँ वह लटका, उसके ठीक ऊपर मधुमक्खियों का छत्ता था। उससे बूँद-बूँद शहद (मधु) टपक रहा था। शहद की बूँद उसके मुँह में गिरी, उसे बड़ा सकून मिला। वृक्ष पर सफेद और काला दो चूहे भी बैठे थे। एक तरफ एक काला तथा दूसरी तरफ सफेद चूहा उन्हीं दोनों टहनियों को कुतर-कुतर काटने लग गये। युवक जहाँ लटका था उसके ठीक नीचे एक पुराना सूखा कुआँ था। उसके भीतर जहरीले सांप छुपे थे। ऊपर लटके युवक को देखकर वे भी उसके नीचे गिरने का इंतजार करते फुंफकार रहे थे।

उसी समय एक विद्याधर उधर से निकला। युवक को मौत के बीच फंसा देखकर उसे दया आ गई। उसने विमान रोका और युवक को पुकारा—"वत्स ! देख तेरे चारों तरफ मौत मुँह बाँए खड़ी है। ले, मैं विमान तेरे पास ला रहा हूँ। तू इसमें बैठ जा। मैं तुझे सुरक्षित अपने स्थान पर पहुँचा दूँगा।"

युवक बोला—"हे दयालु पुरुष ! एक मिनट रुक जाओ। शहद की एक बूँद और चाट लूँ। बहुत मीठा है यह मधु !" विद्याधर ने उसे समझाया—"मधु का लोभ छोड़, अपने चारों तरफ खड़ी मौत को देख और आ जा इस विमान में।"

"एक मिनट ! एक बूँद और।" इस तरह करते हुए युवक मधु बिन्दु का लोभ नहीं छोड़ सका। थक-हार कर विद्याधर आगे अपने रास्ते चला गया।

उपनय : यह संसार ही वृक्षरूप मानव जीवन है। इनमें काल (मौत) रूपी हाथी है। काला चूहा रात, सफेद चूहा दिन का प्रतीक है। जो जीवन की डाली को हर क्षण काटे जा रहे हैं। कूएँ नरक आदि दुर्गति हैं और मधु बिन्दु के समान संसार के क्षणिक विषय-सुख हैं। विद्याधर के समान सद्गुरु हैं, जो उसे दुःखों से बचाने के लिए धर्म रूपी विमान लेकर खड़े हैं। परन्तु मोह-मूढ़ जीव (युवक) संसार के सुखों का स्वाद नहीं छोड़ रहा है। सद्गुरु की चेतावनी भी उसे बचा नहीं सकती।

साभार : सुशील सद्बोध शतक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

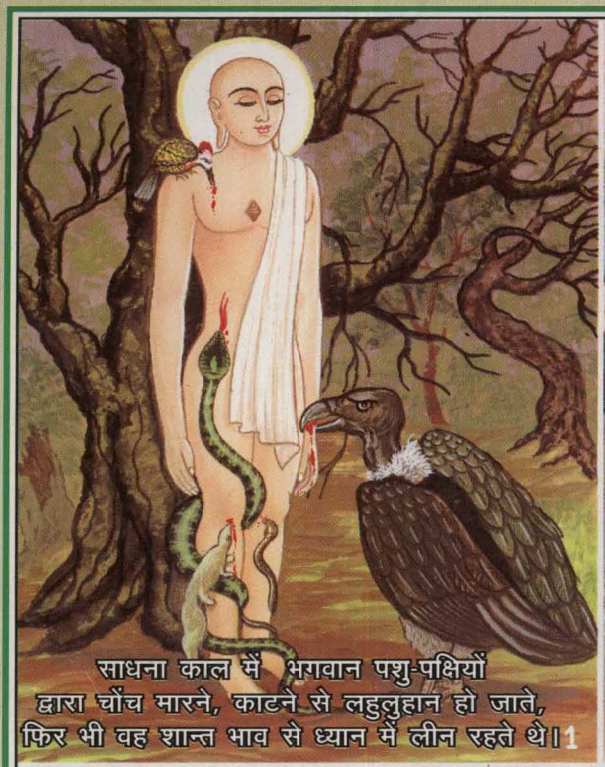

साधना काल में भगवान पशु-पक्षियों द्वारा चोंच मारने, काटने से लहुलुहान हो जाते, फिर भी वह शान्त भाव से ध्यान में लीन रहते थे। 1

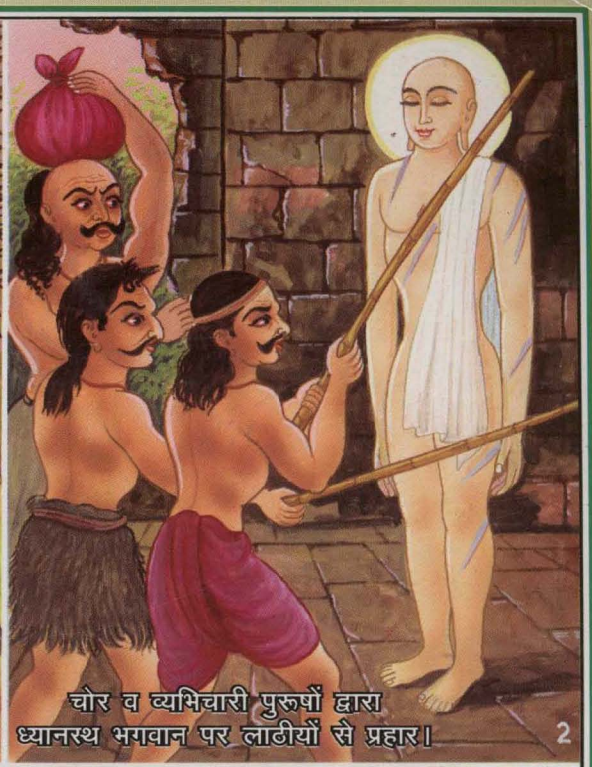

चोर व व्यभिचारी पुरूषों द्वारा ध्यानस्थ भगवान पर लाठीयों से प्रहार। 2

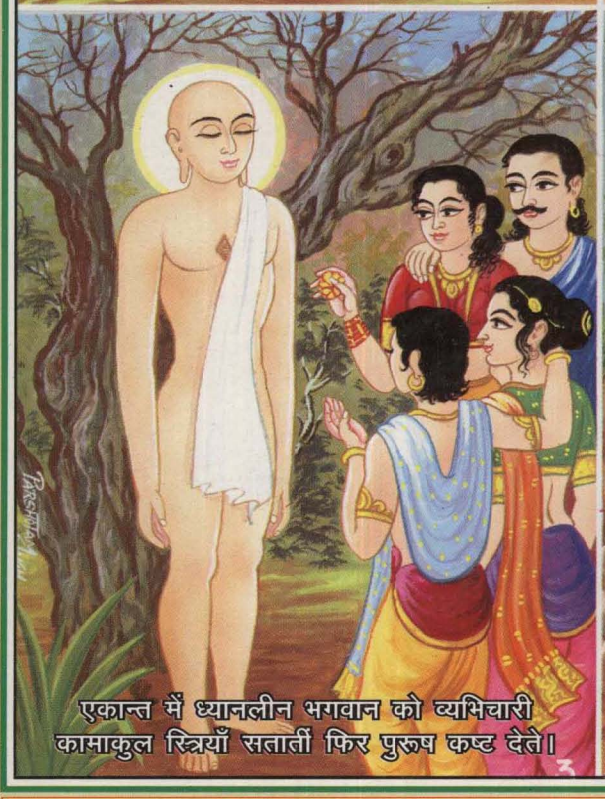

एकान्त में ध्यानलीन भगवान को व्यभिचारी कामाकुल स्त्रियाँ सतातीं फिर पुरूष कष्ट देते। 3

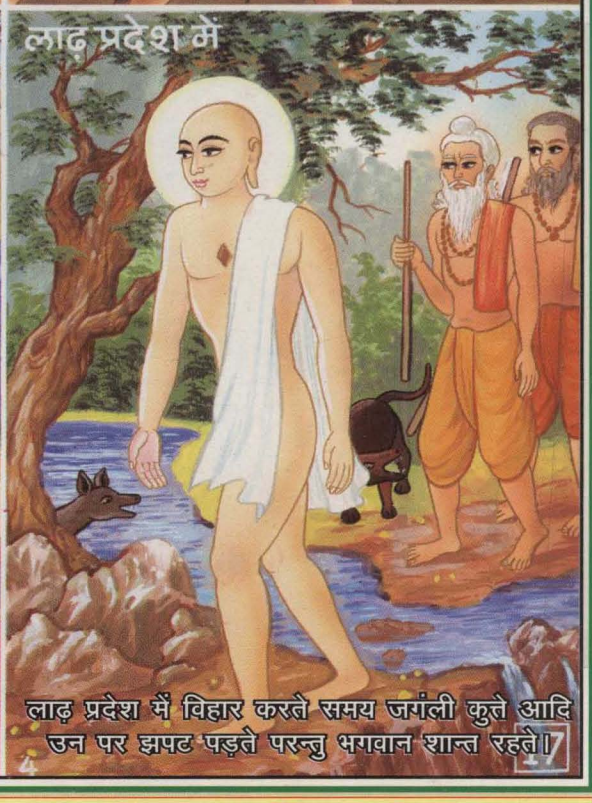

लाढ़ प्रदेश में विहार करते समय जंगली कुत्ते आदि उन पर झपट पड़ते परन्तु भगवान शान्त रहते। 4

भगवान महावीर की साधना काल में होने वाले अनेक उपसर्गों का वर्णन आचारांग सूत्र के नौंवें अध्ययन में किया गया है। उसी आधार पर यह चित्र बनाया गया है।

आभार—यह चित्र प्रवर्तक श्री अमरमुनि जी द्वारा सम्पादित सचित्र आचारांग-सूत्र पुस्तक से लिया गया है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org